भैरव पूजन विधान

महाविद्याओं की सपर्या में भैरव-पूजन का विधान है और उनसे ही आज्ञा लेकर आगे पूजा सम्पन्न की जाती है। केवल माता धूमावती की सपर्या में भैरवपूजा नहीं होता, शेष सभी में यह आवश्यक क्रम है। सभी महाविद्याओं के भैरव के नाम भी पृथक-पृथक हैं परन्तु वटुकभैरव सभी महाविद्या में सर्वमान्य भैरव हैं अतः ग्रन्थ में यथास्थन पर उनकी पूजन-प्रक्रिया दी गई है। भैरवों की जानकारी अलग-अलग ग्रन्थों में उपलब्ध है और सभी में कुछ-कुछ अन्तर है जो कि संभवतः परम्परानुसार है। जैसे तन्त्रग्रन्थों में अष्ट भैरवों का उल्लेख मिलता है जिनके नाम हैं - **असितांग भैरव, चण्ड भैरव, रूरु भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपाल भैरव, भीषण भैरव और संहार भैरव**। वहीं ब्रह्मवैवर्तपुराण में जिन अष्टभैरव का उल्लेख मिलता है वे हैं - **महाभैरव, संहार भैरव, असितांग भैरव, रुद्र भैरव, कालभैरव, क्रोध भैरव, ताम्रचूड़ भैरव और चन्द्रचूड़ भैरव**। पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा प्रपंचसारतन्त्र में उल्लेखित अष्टभैरव हैं- **भूतनाथ भैरव, चण्डकपाल भैरव, रूरू भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कालराज भैरव, भीषण भैरव और संहार भैरव**। सप्तविंशति-रहस्यम् में सात भैरवों का उल्लेख है जो कि **श्रीमन्थान भैरव, फटकार भैरव, एकात्म भैरव, हविर्भक्ष्य भैरव, चण्ड भैरव और भ्रमर भास्कर भैरव**। इसी प्रकार 10 अन्य वीर भैरव है जो कि - **सृष्टिवीर भैरव, स्थितिवीर भैरव, संहारवीर भैरव, रक्तवीर भैरव, यमवीर भैरव, मृत्युवीर भैरव, भद्रवीर भैश्रव, परमार्कवीर भैरव, मार्तण्डवीर भैरव और कालाग्निरुद्रवीर भैरव हैं**। तीन प्रकार के बटुक भैरव - **स्कन्धवटुक, चित्रवटुक और विरंचि बटुक** का भी उल्लेख शास्त्रों में है। तन्त्रमार्ग का प्रामाणिक ग्रन्थ **श्रीरुद्रयामलतन्त्र** में भी कई भैरवों का नामों का उल्लेख हैं। जानकारीमात्र के लिये यहां उनके नाम दिये जा रहे हैं। यथा - **असितांग भैरव, विशालाक्ष भैरव, मार्तण्ड भैरव, मोदकप्रिय भैरव, स्वच्छन्द भैरव, विघ्नसन्तुष्ट भैरव, खेचर भैरव, सचराचर भैरव, रुद्र भैरव, कोडदन्ष्ट्र भैरव, जटाधर भैरव,, विश्वरूप भैरव, विरुपाक्ष भैरव, नानारूपधर भैरव, पर भैरव, वज्रहस्त भैरव, महाकाय भैरव, चण्ड भैरव, प्रलयान्तक भैरव, भूमिकम्प भैरव, नीलकण्ठ भैरव, विष्णु भैरव, कुलपालक भैरव, मुण्डपाल भैरव, कामपाल भैरव, क्रोध भैरव, पिंगलेक्षण भैरव, अभ्ररूप भैरव, धरापाल भैरव, कुटिल भैरव, मन्त्रनायकरूद्र भैरव, पितामह भैरव, उन्मत्त भैरव, वटुनायक भैरव, शंकर भैरव, भूतवेताल भैरव, त्रिनेत्र भैरव, त्रिपुरान्तक भैरव, वरद भैरव, पर्वतावास भैरव, कपाल भैरव, शशिभूषण भैरव, हस्तिचर्माम्बरधर भैरव, योगीश भैरव, ब्रह्मराक्षस भैरव, सर्वज्ञ भैरव, सर्वदेवेश भैरव, सर्वभूतहृदिस्थिता भैरव, भीषण भैरव, भयहर भैरव, कालाग्नि भैरव, महारौद्र भैरव, दक्षिण भैरव, मुखर भैरव, अस्थिर भैरव, संहार भैरव, अतिरिक्तांग भैरव, प्रियंकर भैरव, घोरनाद भैरव, दक्ष भैरव, संस्थित योगीश भैरव** इत्यादि। शिव के इन सभी स्वरूपों का वर्णन विविध शास्त्रों में वर्णित है। हमने इसे समयानुसार चिन्तन-मनन करने मात्र हेतु उल्लेख किया है और साथ ही अपनी याददाश्त में भी जीवन्त रखने के लिए भी लिख दिया। वस्तुतः रुद्र की पूजा में सभी की पूजा समाहित हो जाती है तभी रुद्रीपाठ के माध्यम से एवं पुरुषसूक्त से भैरवों की पूजा का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्यादा जानकारी प्राप्त करने हेतु पाठकगण अन्यान्य परिश्रम कर सकते हैं।